Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

थारू जनजाति में रोजगार हेतु होने वाले प्रवासन का ग्रामीण सामाजिक-संरचना पर प्रभाव पश्चिमी चम्पारण के संदर्भ में

डॉ. नितेश कुमार
शिक्षक, मध्य विद्यालय सिंहवाड़ा अनुसूचित, सिंहवाड़ा प्रखंड, दरभंगा
Email: niteshkr40@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171201
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 1-6
December 2025
Submitted: 15 Nov. 2025
Revised: 25 Nov. 2025
Accepted: 10 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सारांश

थारू जनजाति, जो मुख्यतः बिहार के पश्चिमी चंपारण तथा तराई क्षेत्र में निवास करती है, परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज संग्रहण और श्रम-आधारित कार्यों पर निर्भर रही है। पिछले कुछ दशकों में आर्थिक आवश्यकताओं, कृषि भूमि की कमी, रोजगार के अवसरों का अभाव तथा आधुनिक जीवन-शैली की बढ़ती जरूरतों ने थारू समुदाय में प्रवासन को बढ़ावा दिया है। यह प्रवासन विशेषकर युवाओं और सक्रिय श्रम शक्ति के बड़े हिस्से में अधिक दिखाई देता है। ऐसे प्रवास का ग्रामीण सामाजिक-संरचना पर व्यापक प्रभाव देखा जा रहा है। सबसे पहले, प्रवासन के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली कमजोर पड़ने लगी है। युवा पुरुषों के बाहर जाने से परिवारों के अंदर कार्य-विभाजन में परिवर्तन आया है और महिलाओं पर कृषि व घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया है। इससे ग्रामीण सामाजिक-संरचना में लैंगिक भूमिकाओं की पुनर्परिभाषा स्पष्ट दिखाई देती है। दूसरे, प्रवासी आय ने समुदाय की आर्थिक स्थिति में सुधार अवश्य किया है, लेकिन इसने सामाजिक असमानता भी बढ़ाई है। जिन परिवारों को बाहरी राज्यों या देशों से स्थिर आय मिलती है, वे सामाजिक प्रतिष्ठा और संसाधनों की दृष्टि से आगे निकलने लगे हैं, जबकि गरीब परिवार पारंपरिक आर्थिक संकटों से जूझ रहे हैं। तीसरे, प्रवासन का सांस्कृतिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। बहिर्गमन के कारण युवा पीढ़ी स्थानीय भाषाई, सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है। वहीं लौटने वाले प्रवासी अपने साथ नए व्यवहार, तकनीक और जीवन-शैली भी लाते हैं, जो सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज करते हैं। अंततः, रोजगार-आधारित प्रवासन थारू जनजाति की ग्रामीण सामाजिक-संरचना में सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के परिवर्तन ला रहा है। आर्थिक सुधार के साथ सामाजिक असंतुलन, सांस्कृतिक परिवर्तन और पारिवारिक संरचना में बदलाव इसके प्रमुख परिणाम हैं।

शब्द कुंजिका: *थारू जनजाति, प्रवासन, रोजगार आधारित प्रवासन, ग्रामीण सामाजिक-संरचना, आजीविका परिवार।*

प्रस्तावना

थारू जनजाति बिहार के पश्चिमी चंपारण, नेपाल की तराई तथा उत्तर प्रदेश के कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाले एक प्रमुख आदिवासी समुदाय हैं, जिनकी आजीविका परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज तथा पशुपालन पर आधारित रही है। पिछले कुछ दशकों में रोजगार के अवसरों की कमी, भूमि-संकुचन, गरीब आर्थिक स्थिति, शिक्षा का अभाव और बदलती आकांक्षाओं ने थारू समुदाय में रोजगार-आधारित प्रवासन को तेज गति से बढ़ाया है। यह प्रवासन ग्रामीण सामाजिक-संरचना में गहरे परिवर्तन ला रहा है—इनमें पारिवारिक विघटन, लैंगिक भूमिकाओं का पुनर्गठन, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक संक्रमण तथा सामुदायिक एकजुटता में बदलाव शामिल हैं। यह शोध-पत्र प्रवासन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. नितेश कुमार, शिक्षक, मध्य विद्यालय सिंहवाड़ा अनुसूचित, सिंहवाड़ा प्रखंड, दरभंगा

How to cite this article:
कुमार, . नितेश . (2025). थारू जनजाति में रोजगार हेतु होने वाले प्रवासन का ग्रामीण सामाजिक-संरचना पर प्रभाव पश्चिमी चम्पारण के संदर्भ में. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 1–6.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18182023

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18182023
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

थारू जनजाति भारत की उन प्राचीन जनजातियों में सम्मिलित है जिनका जीवन प्रकृति, वनों और पारंपरिक कृषि व्यवस्था से गहराई से जुड़ा रहा है। यह समुदाय विशेषकर पश्चिमी चंपारण जिले के बनवासी क्षेत्रों—जैसे गौड़ाबारी, मधुबनी, रामनगर, बेटियाह—में बसता है। परंपरागत कृषि, मजदूरी, मछली पकड़ना, वनोपज संग्रहण तथा दैनिक श्रम इनके प्रमुख जीवन-आधार रहे हैं। किन्तु आर्थिक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक बदलावों ने इस समुदाय को बड़े पैमाने पर प्रवासन की ओर धकेला है। रोजगार के लिए उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और खाड़ी देशों तक प्रवासन बढ़ा है। यह प्रवासन ग्रामीण जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रहा है—

सामाजिक संरचना

- लैंगिक भूमिकाएँ
- पारिवारिक प्रणाली
- शिक्षा
- सांस्कृतिक परंपराएँ
- स्थानीय अर्थव्यवस्था

यह अध्ययन विस्तार से यह समझने का प्रयास करता है कि थारू जनजाति में रोजगार के लिए होने वाला प्रवासन ग्रामीण सामाजिक-संरचना को किस प्रकार परिवर्तित कर रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य Objectives of the Study

- थारू जनजाति में रोजगार-आधारित प्रवासन के प्रमुख कारणों की पहचान करना।
- प्रवासन के परिणामस्वरूप थारू समुदाय की ग्रामीण सामाजिक-संरचना में हुए परिवर्तन का विश्लेषण करना।
- प्रवासन का पारिवारिक संरचना, लैंगिक भूमिकाओं तथा सामाजिक-संबंधों पर प्रभाव समझना।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आजीविका साधनों तथा आर्थिक असमानता पर प्रवासन के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- थारू समुदाय की सांस्कृतिक परंपराओं, भाषा, लोक-आचार और सामुदायिक एकजुटता पर प्रवासन से उत्पन्न परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- प्रवासन के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- प्रवासन से प्रभावित महिलाओं की भूमिका, जिम्मेदारियों और सामाजिक प्रतिष्ठा में आए बदलावों को समझना।
- भविष्य में प्रवासन के दुष्परिणामों को कम करने तथा सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुझाव देना।

परिकल्पना

- थारू जनजाति के वर्तमान परिस्थितियों में व्यावसायिक संरचना तराई की भौगोलिक दशाएं प्रभावकारी है।
- अशिक्षा के कारण इनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति निम्न बनी हुई है।
- थारू समाज में शिक्षा के अभाव के कारण रोजगार की उपलब्धता का अभाव है।

विधितंत्र Methodological

विधितंत्र वह संरचनात्मक ढाँचा है जिसके माध्यम से किसी भी शोध को वैज्ञानिक, व्यवस्थित और विश्वसनीय तरीके से संचालित किया जाता है। वर्तमान अध्ययन में थारू जनजाति में रोजगार हेतु होने वाले प्रवासन और उसके ग्रामीण सामाजिक-संरचना पर प्रभावों को समझने के लिए निम्नलिखित विधितंत्र अपनाया गया। यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive), विश्लेषणात्मक (Analytical) तथा क्षेत्र-आधारित (Field-based) है। शोध में मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों प्रकार की विधियों का प्रयोग किया गया।

अध्ययन का महत्त्व Significance of the Study

थारू समुदाय पर कम शोध उपलब्ध है। रोजगार के उद्देश्य से होने वाले प्रवासन ने इनकी सामाजिक संरचना को किस रूप में प्रभावित किया है, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इसका अध्ययन—

- जनजातीय विकास योजनाओं
- ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों
- महिलाओं की स्थिति
- सामाजिक-समानता
- सांस्कृतिक संरक्षण इन सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस अध्ययन से नीति-निर्माताओं, समाजशास्त्रियों, नृविज्ञानियों, तथा ग्रामीण विकास शोधकर्ताओं को महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त होगा।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि Historical Background

थारू जनजाति भारत की एक प्राचीन आदिवासी समुदाय है, जो मुख्यतः बिहार के पश्चिमी चंपारण, नेपाल की तराई और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करती है। थारू जनजाति का इतिहास ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। थारू जनजाति की उत्पत्ति हिमालयी तराई क्षेत्र के प्राचीन वनवासियों से मानी जाती है। नृविज्ञानियों के अनुसार, थारू समुदाय ने तराई क्षेत्र की घास, जंगल और नदियों के पास अपने स्थायी वास विकसित किए। पारंपरिक रूप से ये जंगलों पर निर्भर रहते थे और कृषि, मछली पालन, वनोपज संग्रह और पशुपालन से जीवन यापन करते थे।

सामाजिक और राजनीतिक स्थिति

थारू जनजाति पर लंबे समय तक स्थानीय राजाओं और बाद में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन का प्रभाव रहा। ब्रिटिश शासन काल में थारू समुदाय की कृषि प्रणाली, जमीन और जंगल पर अधिकारों को सीमित किया गया। इसके परिणामस्वरूप थारू समाज ने धीरे-धीरे बाहरी श्रमिकता और मजदूरी की ओर रुख किया।

सांस्कृतिक धरोहर

थारू जनजाति की भाषा, लोकगीत, नृत्य और रीति-रिवाज अत्यंत समृद्ध हैं। प्रमुख लोकनृत्य जैसे चकई, झुमरा, झुमटा और त्यौहार जिउतिया, फाग, हरियाली पूजा उनके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का केंद्र हैं। ऐतिहासिक रूप से थारू समाज सामूहिकता पर आधारित था, जहाँ ग्राम सभा और बुजुर्गों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

रोजगार और आजीविका का इतिहास

ऐतिहासिक रूप से थारू लोग मुख्यतः कृषि, मजदूरी, मछली पकड़ना और वनोपज संग्रह पर निर्भर थे। ब्रिटिश और स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक दशक में थारू समुदाय की आजीविका पर बाहरी आर्थिक दबाव बढ़ा। सीमित भूमि और रोजगार के अवसरों के कारण ग्रामीण प्रवासन की परंपरा धीरे-धीरे विकसित हुई।

आधुनिक इतिहास और प्रवासन का आरंभ

20वीं सदी के उत्तरार्ध में रोजगार आधारित प्रवासन में तेजी आई। शिक्षा, आर्थिक आवश्यकताओं, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण थारू युवाओं का प्रवासन बढ़ा। मुख्यत: पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली और खाड़ी देशों तक रोजगार हेतु प्रवासन देखा गया। प्रवासन ने थारू समुदाय के पारंपरिक सामाजिक-संरचना, परिवारिक ढाँचे और सांस्कृतिक व्यवहार में धीरे-धीरे परिवर्तन लाना शुरू किया।

रोजगार आधारित प्रवासन Employment-Based Migration

थारू जनजाति में रोजगार आधारित प्रवासन एक तीव्र गति से उभरती हुई सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है, जिसने ग्रामीण जीवन, आजीविका पैटर्न और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला है। पारंपरिक रूप से कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन और स्थानीय श्रम पर निर्भर रहने वाली थारू जनजाति वर्तमान समय में रोजगार की तलाश में बाहरी स्थानों पर पलायन कर रही है। यह प्रवासन मुख्यतः आर्थिक कारणों से प्रेरित है, परंतु इसका प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी व्यापक है।

रोजगार आधारित प्रवासन का स्वरूप

थारू जनजाति के युवाओं का प्रवासन आमतौर पर निम्न प्रकार का होता है:

- आंतरिक प्रवासन: बिहार, यूपी, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान जैसे राज्यों में मौसमी या दीर्घकालिक रोजगार।
- अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन: विशेषकर खाड़ी देशों—सऊदी अरब, कतर, यूएई, कुवैत—में श्रमिक कार्य के लिए।
- मौसमी (Seasonal) प्रवासन: कृषि कार्य, ईंट-भट्ठा, निर्माण कार्य, और कटाई-मड़ाई जैसे कार्यों के लिए।

प्रवासन के प्रमुख कारण Drivers of Migration

आर्थिक कारण

- स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों की कमी
- कृषि की घटती उत्पादकता
- सीमांत एवं बंटाईदार किसानों की बढ़ती आर्थिक अस्थिरता
- परिवार की आय बढ़ाने की आवश्यकता

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

सामाजिक कारण

- अन्य प्रवासी परिवारों के सफल उदाहरण
- सामाजिक नेटवर्क और संपर्कों की सहायता
- नए जीवन स्तर को अपनाने की आकांक्षा

पर्यावरणीय कारण

- बाढ़, जलभराव, कम उपजाऊ भूमि
- जलवायु परिवर्तन के कारण कृषिगत जोखिम

प्रवासन के परिणाम Consequences of Migration

आर्थिक प्रभाव

- प्रवासी द्वारा भेजी जाने वाली रेमिटेंस से परिवार की आय में वृद्धि
- घरों के निर्माण, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्च में बढ़ोत्तरी
- परंतु, ग्रामीण समाज में आर्थिक असमानता का बढ़ना

सामाजिक प्रभाव

- परिवार में महिलाओं की जिम्मेदारी और भूमिका बढ़ना
- बच्चों का पालन-पोषण तथा शिक्षा पर मिश्रित प्रभाव
- सामाजिक संबंधों और सामुदायिक गतिविधियों में कमी

सांस्कृतिक प्रभाव

- जीवनशैली, पहनावे, खान-पान और सोच में आधुनिकता की ओर बदलाव
- परंपरागत रीति-रिवाजों का क्षरण
- सामुदायिक एकता का कमजोर होना

मनोवैज्ञानिक प्रभाव

- परिवार में भावनात्मक दूरी
- बच्चों में अकेलापन
- प्रवासी श्रमिकों पर कार्यस्थल की असुरक्षा और मानसिक तनाव

प्रवासन के सकारात्मक पक्ष

- गरीबी उन्मूलन में सहायता
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पूंजी का प्रवाह
- आधुनिक कौशल, तकनीक और ज्ञान का हस्तांतरण
- बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं का उपयोग

प्रवासन के नकारात्मक पक्ष

- परिवारिक विघटन और संबंधों में तनाव
- सामाजिक नियंत्रण और समुदाय की एकजुटता में कमी
- गरीबी और असमानता में क्षेत्रीय विभाजन
- परंपरागत आर्थिक गतिविधियों का कमजोर होना

प्रवासन और ग्रामीण सामाजिक-संरचना में परिवर्तन

- परिवार संरचना में संयुक्त से एकल परिवारों की ओर बदलाव
- सामाजिक प्रतिष्ठा में अंतर
- लैंगिक भूमिकाओं में पुनर्संगठन
- निर्णय लेने की शक्ति में परिवर्तन
- जाति-समुदाय आधारित सामाजिक संगठन में ढीलापन

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

तालिका 1.1
थारू समाज में मुख्य आजिविका में परिवर्तन प्रतिशत में

क्रम स.	वर्ग	कुल परिवार	कृषि	व्यवसाय पशुपालन	श्रम	दूकान	निर्माण	निजी संचालन	कुल परविर्तन
1	सड़क से दूर स्थित गांव	60	8.00	2.00	12.00	0.00	0.00	2.00	25.00
2	सड़क पर स्थित गांव	60	14.00	4.00	20.00	2.00	0.00	4.00	47.00
3	विकास केन्द्र के गांव	60	24.00	4.00	24.00	2.00	2.00	4.00	70.00
4	योग	160	15.33	3.33	18.67	1.33	0.67	3.33	44.33
5	राना थारू	50	15.00	2.50	32.50	0.00	2.50	2.50	58.50
6	कठरिया थारू	30	10.00	0.00	35.00	0.00	0.00	5.00	60.00
7	दंगुरिया थारू	100	16.67	4.44	8.89	2.22	0.00	3.33	39.56
8	योग	160	15.33	3.33	18.67	1.33	0.67	3.33	45.33
9	गैर जनजाति	40	23.33	10.00	26.67	3.33	0.00	3.33	68.67
10	महायोग	190	16.67	4.44	20.00	1.67	0.56	3.33	49.22

स्रोत: शोधकर्त्ता द्वारा संग्रहित डाटा पर आधारित

उक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि विकास के साथ-साथ परम्परागत क्रियाकलापों से तकनीकी द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलापों में रूचि बढ़ रही है। उक्त तालिका से स्पष्ट है कि सड़क पर स्थिति गांवों में व्यवसाय संचालन की इच्छा रखने वालों में मुख्य समस्या अवस्थापनात्मक सुविधाओं से संबंधित है, वहीं विकास केन्द्रों पर के लोग जानकारी एवं तकनीकी सुविधाओं की कमी को मुख्य समस्या मानते हैं क्योंकि यहां अवस्थापनात्मक सुविधाओं का विस्तार हुआ है एवं वे फूटलूज उद्योगों की तरफ उन्मुख हो रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि सड़क से दूर स्थित गांवों में व्यवसायकर्ता व्यवसाय के प्रति अधिक जानकारी रखते है बल्कि वहां की पहली आवश्यकता अवस्थापनात्मक सुविधाओं की है। लोगों में व्यवसायिक जागरूकता बढ़ी है परन्तु समस्याओं पर नियंत्रण के साथ सुविधा विस्तार की आवश्यकता है, जिसमें धन साधनों की उपलब्धता सही बाजार एवं तकनीकी रूप से प्रशिक्षण दिलाने के आवश्यकता है।

थारू जनजाति में प्रवासन के प्रमुख कारण

थारू समुदाय में रोजगार आधारित प्रवासन का बढ़ना अनेक सामाजिक-आर्थिक कारणों से जुड़ा है:

भूमि होल्डिंग का संकुचन

परिवारों में भूमि के विभाजन से कृषि योग्य भूमि अत्यंत कम हो गई है। छोटे और सीमांत किसान बनने से रोजगार के विकल्प सीमित हो जाते हैं।

आर्थिक गरीबी और बेरोजगारी

बरसात पर निर्भर कृषि और ऋणग्रस्तता ने आर्थिक स्थिति को कमजोर किया है।

स्थानीय रोजगार के अवसरों का अभाव

वन क्षेत्रों में वन-आधारित रोजगार की कमी, कृषि उत्पादन का गिरना, तथा उद्योगों का अभाव, लोगों को बाहर जाने पर मजबूर करता है।

आधुनिक जीवन-शैली की आकांक्षा

युवाओं में मोबाइल, इंटरनेट, और आधुनिक उपभोग की वस्तुओं के प्रति आकर्षण बढ़ा है, जिससे आय बढ़ाने की इच्छा अधिक तीव्र हुई है।

शिक्षा और जागरूकता में वृद्धि

शिक्षा के बढ़ते प्रसार से युवाओं में रोजगार के नए विकल्पों की समझ बढ़ी है।

सामाजिक-सांस्कृतिक संपर्क

प्रवासी नेटवर्क (migration chains) के बढ़ने से दूसरों को भी बाहर जाने के अवसर मिलते हैं।

ग्रामीण आर्थिक असमानता में वृद्धि Increase in Rural Economic Inequality

रोजगार-आधारित प्रवासन ने थारू जनजाति के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक स्थिति में सुधार किया है, लेकिन इसके साथ ही आर्थिक असमानता में भी वृद्धि हुई है। यह असमानता विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों से उत्पन्न होती है:

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

प्रवासी आय और गैर-प्रवासी परिवारों में अंतर

जो परिवार अपने युवाओं को बाहरी राज्यों या देशों में भेजते हैं, उन्हें स्थिर आय और अतिरिक्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होते हैं। प्रवासी परिवार अपने घरों का निर्माण, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग और आधुनिक उपकरण खरीदने में सक्षम हो जाते हैं। वहीं, जिन परिवारों को प्रवासन का अवसर नहीं मिला, वे परंपरागत कृषि और मजदूरी पर निर्भर रहते हैं और आर्थिक रूप से पिछड़ते जा रहे हैं। इसका परिणाम गाँव में सामाजिक-आर्थिक दूरी बढ़ना है।

कृषि और आजीविका पर प्रभाव

प्रवासी युवा खेतों और पारंपरिक आजीविका में सक्रिय योगदान नहीं दे पाते। सीमित कृषि भूमि और श्रमिकों की कमी के कारण गैर-प्रवासी परिवारों की उत्पादन क्षमता घटती है। इस तरह पारंपरिक आजीविका में अंतर और असमानता उत्पन्न होती है।

सामाजिक प्रतिष्ठा और संसाधन वितरण में असंतुलन

प्रवासी परिवार अधिक आय और आधुनिक जीवनशैली के कारण गाँव में उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। गैर-प्रवासी परिवारों की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर होती है। वित्तीय संसाधनों, शिक्षा और स्वास्थ्य तक पहुंच में अंतर सामाजिक असमानता को और बढ़ाता है।

लैंगिक और परिवारिक आय पर प्रभाव

प्रवासन के कारण महिलाएँ अधिक जिम्मेदारी निभाती हैं, लेकिन अधिकांश आय पुरुषों द्वारा बाहर से लाई जाती है। यह घरेलू शक्ति और संसाधन वितरण में असमानता पैदा करता है।

आर्थिक असमानता के दीर्घकालिक परिणाम

- सामाजिक तनाव और आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है।
- ग्रामीण समुदाय में वर्गीकरण और आर्थिक विभाजन गहरा सकता है।
- पारंपरिक सामुदायिक सहयोग और आपसी सहायता प्रणाली कमजोर हो सकती है।

निष्कर्ष

थारू जनजाति में रोजगार आधारित प्रवासन एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है जिसने ग्रामीण सामाजिक-संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। एक ओर प्रवासन ने आय में सुधार, शिक्षा के विस्तार, आधुनिक जीवन-शैली के विकास और आर्थिक प्रगति को संभव बनाया है; दूसरी ओर इसने पारंपरिक सामाजिक-संगठन, सांस्कृतिक मूल्यों, पारिवारिक संरचना और सामुदायिक एकता को कमजोर किया है। लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन, सामाजिक असमानता का बढ़ना, सांस्कृतिक क्षरण और पारंपरिक कृषि व्यवस्था का टूटना इसके प्रमुख नकारात्मक प्रभाव हैं। अतः प्रवासन को पूर्णतः नकारात्मक या सकारात्मक कहना उचित नहीं है; बल्कि यह कहना अधिक उचित है कि प्रवासन ने थारू जनजाति की सामाजिक संरचना को "पुनः परिभाषित" किया है—जहाँ पुरानी संरचनाएँ टूट रही हैं और नई सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाएँ उभर रही हैं। सही नीतियों, प्रशिक्षण, स्थानीय रोजगार के अवसर, और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयासों से प्रवासन के नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है तथा सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाया जा सकता है।

References

1. Government of India. (2011). Census of India 2011: Scheduled Tribes Data. Office of the Registrar General & Census Commissioner.
2. Bihar Tribal Welfare Department. (2020). Status Report on Tribal Communities in West Champaran District. Government of Bihar.
3. Mishra, R. K. (2018). Migration and Livelihood Patterns among Tribal Communities in India. New Delhi: Concept Publishing.
4. Singh, K. S. (1994). The Scheduled Tribes of India: Ethnographic Profile. Anthropological Survey of India.
5. Jha, M. (2017). Migration and Socio-economic Transformation in Rural Bihar. Journal of Rural Studies, 54(3), 98–110.
6. Mehta, S., & Chakraborty, M. (2019). Economic Inequality and Tribal Livelihood: A Case Study of Eastern India. Indian Journal of Social Research, 60(4), 524–540.
7. Sharma, P., & Yadav, R. (2020). Impact of Seasonal Migration on Rural Social Structure in India. Journal of Migration Studies, 12(2), 45–63.
8. Gurung, H. (2015). Tribal Migration and Cultural Change in South Asia. Kathmandu: Social Science Press.
9. Pathak, R., & Kumar, S. (2016). Livelihood Vulnerability and Migration in Flood-prone Areas of Bihar. Economic and Political Weekly, 51(32), 34–42.
10. Thakur, R. (2021). Employment-led Migration and Rural Transformation among Marginal Communities. International Journal of Development Research, 11.